



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 235]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 11, 2002/भाद्र 20, 1924

No. 235]

NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 11, 2002/BHADRA 20, 1924



बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(बाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 सितम्बर, 2002

अंतिम जांच परिणाम

विषय:- यूरोपियन संघ के मूल से अथवा वहाँ से निर्यातित थर्मल सैन्सिटिव, पेपर के आयात पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा के विषय में पाटनरोधी जांच।

सं 0 31/1/2001-डीजीएडी- वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली और क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के अधीन।

क. प्रक्रिया

2. जांच के संबंध में नीचे उल्लिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

(i). निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत यूरोपियन संघ के मूल से (जिसे बाद में संबद्ध देश/संघ कहा गया है) अथवा वहाँ से निर्यातित थर्मल सैन्सिटिव पेपर (जिसे बाद में संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) पर 3.3.2000 के अन्तिम जांच अधिसूचना सं. 25/1/98/एडीडी के आधार पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा प्रारम्भ की है। यह समीक्षा अधिसूचना सं 0 31/1/2001/डीजीएडी दिनांक 13.9.2001 के अनुसार की गयी है।

(ii). निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संबद्ध देश/क्षेत्र के मूल से अथवा वहाँ से निर्यात किए गए थर्मल सैन्सिटिव पेपर के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के संबंध में अन्तिम समीक्षा के प्रारम्भ के

बारे में अधिसूचना सं. 31/1/2001-डीजीएडी दिनांक 13.9.2001 द्वारा अधिसूचित किया है । प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के प्रारंभ अधिसूचना की एक प्रति भिजवाई थी जिसमें पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था ।

(iii) प्राधिकारी ने ज्ञात उद्योग संगठन की और घरेलू उद्योग के पब्लिक नोटिस की एक प्रति भिजवाई थी और उन्हें उनके विचार लिखित रूप में भेजने का अवसर दिया है ।

(iv) प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों को पब्लिक नोटिस की प्रति अग्रेषित की है और नियम 6(2) के अनुसार उनके विचार लिखित रूप में देने का एक अवसर दिया था । प्राधिकारी ने निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी:-

जूजो पेपर कं. लि. पीओ बाक्स सं. 92
पीआई - 5527501 कौटुआ फिनलैंड

जापान पत्प्र एंड पेपर जीएमबीएच
इनर मैनसीरासे, 14-16
402100, सेलडाल्फ, जर्मनी

स्टोरटा स्पैजिआलपेपियर जीएमबीएच
हुजूमर स्ट्रैसे 12
29241, फ्लैन्सबर्ग, जर्मनी

नितसुबिशी हाइटेक पेपर लिमिटेड
हुजूमर स्ट्रैसे 12,24941
फ्लैन्सबर्ग, जर्मनी

(v) प्राधिकार ने नियम 6(5) के अनुसार थर्मल सेंसिटिव पेपर के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों तथा उपभोक्ताओं (याचिकाकर्ता द्वारा जिनका विवरण मूल जांच परिणामों में उपलब्ध कराया गया था) को पब्लिक नोटिस की प्रति अग्रेषित की और पत्र की तारीख से 40 दिन के भीतर लिखित रूप में उनके विचार भिजवाने की सलाह दी थी ।

कैन्ट्रोनिक्स ऑफिस इक्विपमेंट्स प्रा० लि०, मुम्बई-400007
हिन्दुस्तान सेल्स, दिल्ली - 110006
VI आफिस इक्विपमेंट्स प्रा० लि०, मुम्बई-600006
रेशनल बिजनैस कार्पोरेशन, नई दिल्ली - 110052
हरिति पेपर प्रा० लि०, जयपुर
वर्धमान पेपर प्राडक्ट्स, औरंगाबाद
वैष्णों पेपर प्राडक्ट्स दिल्ली -6
सोहन लाल नेम चन्द जैन, दिल्ली - 110006
अलंकार स्टेशनरी मार्ट, दिल्ली - 110006

मोदी हास्पिटल एप्लाइन्सिस मैन्डु कं0 लि0, चेन्नई-93
 सोहम इन्डस्ट्रीज प्रा0 लि0, मुम्बई - 400002
 टोकुशु मेनर पेपर मैन्यु कं0 चैन्नई - 600066
 हरियाणा ट्रेडर्स प्रा0 लि0, दिल्ली-110006
 श्याम ट्रेडर्स, दिल्ली - 110006
 वर्षा ट्रेडर्स, मुम्बई
 एशियन कोटिड पेपर प्रा0 लि0, नई दिल्ली
 दि एम्बेसी ऑफ फिनलैंड, नई दिल्ली-110021
 एक्सैल मार्क, चेन्नई-600001
 ऑल इंडिया थर्मल पेपर डीलर एसोसिएशन नई दिल्ली

(vi) प्राधिकारी ने नियम 6(2) के अनुसार भारत स्थित जर्मन संघ गणराज्य और फिनलैंड के दूतावासों, यूरोपियन यूनियन, भारत के यूरोपियन हाई कमीशन के प्रतिनिधिमंडल को जांच परिणाम अधिसूचना की प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी कि अपने देश के निर्यातकों/आयातकों को प्रश्नावली का जवाब निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें ।

(vii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए 01.03.2002 को अवसर प्रदान किया था । मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दर्ज करने का अनुरोध किया गया था । पार्टियों से प्रतिपक्षी पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने और उसका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ।

(viii) जांच के दौरान ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के अतिरिक्त निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने अपने जवाब/सूचनाएँ दायर की ।

मैसर्स पेपियर फैबरिक ऑगस्ट कोइलेर एजी-जर्मनी

(ix) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उनके अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध करवाई थी ।

(x) इन जांच परिणामों में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गये तर्कों पर उचित कार्रवाई की गई है ।

(xi) उपर्युक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 2.9.2002 के प्रकटन विवरण-पत्र के तहत बताया गया था और उनके संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है ।

(xii) इस जांच में 1 अप्रैल, 2000 से 31 मार्च, 2001 तक की अवधि शामिल हैं ।

(xiii) इस अधिसूचना के *** भाग में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना शामिल है और जिन पर प्राधिकारी द्वारा नियमों के तहत उसी रूप में विचार किया गया है।

(ख) याचिकाकर्त्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच।

3. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों जो प्रारंभिक जांच अधिसूचना के जवाब में, मौखिक सुनवाई के बाद और प्रकटन विवरण के जवाब में उठाए गए हैं, उन पर नीचे दिए गए संगत पैराग्राफों में उस सीमा तक विचार किया गया है, जहाँ तक वे नियमों के अनुसार संगत हैं और जहाँ तक वे इस मामले पर प्रभाव डालते हैं। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया और जहाँ कहीं उचित समझा गया है नीचे दिए गए संगत पैराग्राफों में उन पर विचार किया गया है।

(ग) विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

4. थर्मल सेंसोटिव पेपर ऐसा कागज है जिस पर रसायनों के विशेष मिश्रण की परत हो है जो मृदु कागज को थर्मल सेंसिटिव गुण उपलब्ध कराती है। कागज पर डाली गई नियंत्रित तापीय ऊर्ध्वा से कागज पर अंकन किया जाता है। थर्मल सेंसेटिक पेपर का प्रयोग मूलतः इलैक्ट्रानिक संचारणों के जरिए संदेशों को रिकार्ड करने के लिए किया जाता है जहाँ मशीन का प्रयोग ऊर्ध्वा इण्डिकेटरों की संवेदनशीलता के माध्यम से संदेशों और रिपोर्टों को रिकार्ड करने के लिए किया जाता है। यह मूलतः फैक्स मशीनों में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग ईसीजी मशीनों और अन्य नियंत्रित संपर्करणों, भूकम्प लेखी मशीनों, एयरलाइन्स बैगज टैगिंग, टिकटों तथा बॉर्डिंग कार्डों अंतर्देश में भी किया जाता है। टीएसपी को सीमाशुल्क अधिनियम के अध्याय 48 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। उत्पाद का आबद्ध सीमाशुल्क वर्गीकरण नहीं किया गया है। तथापि, इसे सामान्यतः उप-शीर्ष 4809.10 के अंतर्गत अर्थात् सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 का कार्बन या इसके समान प्रतिलिपि पेपर वर्गीकरण में शामिल किया जाता है। थर्मल सैन्सिटिव पेपर सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण के शीर्ष के 4811 का और 4816 के विभिन्न उप-शीर्षों के अंतर्गत भी स्वीकृति नहीं जाती है। ये वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और वर्तमान जांच के क्षेत्र पर उनकी किसी प्रकार से खाली नहीं हैं।

5. याचिकाकर्त्ताओं ने कहा है कि विशिष्ट प्रयोजनों में प्रयोग के लिए संबद्ध वस्तुओं का संचालन अनेक आकारों में किया जाता है। याचिकाकर्त्ता अधिकांश उत्पाद भारी-भरकम गोलों का द्वारा है और उसके बाद इन्हें प्रारंभ के बाजार में (स्लिटर्स के रूप में ज्ञात) कम्पनियों द्वारा वांछित आकार में काटा जाता है। विशिष्ट प्रयोजनों के प्रयोग के लिए भारी गोलों और काटे गए छोटे गोलों की कीमत में अत्यधिक अंतर होता है। विशिष्ट प्रयोगों के प्रयोग के लिए वस्तुओं का आयात भारी गोलों एवं तैयार किए गए छोटे गोलों, दोनों में किया जाता है। उत्पाद का छ: अंक स्तर का आबद्ध सीमाशुल्क वर्गीकरण नहीं किया गया है। इसलिए डीजीसीआई एंड एस अथवा माध्यमिक ज्ञातों के आंकड़े भारी गोलों एवं कटे हुए गोलों में अन्तर करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। भारी गोलों पर आयात निरपवाद रूप से कंटेनर भार के अनुसार खंडों में किया जाता है जबकि कटे हुए, गोलों का आयात भार के संबंध में काफी कम होता है। भारी गोलों और कटे हुए गोलों की कीमतों के

भारी अंतर को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि दोनों किसी की तुलना अलग-अलग की जाए । याचिकाकर्ता ने यह तर्क भी दिया है कि वर्ग मीटर के अनुसार निर्यात कीमत में भारी अंतर की वृष्टि से एक ही ग्राहक/देश के लिए समस्त गणना सामग्री के भार के अनुसार की जाए ।

6. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के विषय में कोई निवेदन प्राप्त नहीं हुए है । अतः प्राधिकारी इस बात की पुष्टि करते हैं कि थर्मल सैन्सिटिव पेपर ही विचाराधीन उत्पाद है ।

7. याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए जाने वाला थर्मल सैन्सिटिव पेपर और यूरोपियन यूनियन से निर्यातित थर्मल सैन्सिटिव पेपर विभिन्न लक्षणों के संबंध में बहुत ज्यादा समानता रखता है और तकनीकी एवं व्यापारिक तौर से एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं । अतः याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित थर्मल सैन्सिटिव पेपर और यूरोपियन यूनियन से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं में कोई अन्तर नहीं है । इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किए गए । इसलिए प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित थर्मल सैन्सिटिव पेपर विचाराधीन उत्पाद के समान है ।

(घ) घरेलू उद्योग

8. मैसर्स श्री कृष्ण पेपर मिल्स एंड इन्डस्ट्रीज लिमिटेड घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करती है । क्योंकि वह थर्मल सैन्सिटिव पेपर के शत-प्रतिशत भारतीय उत्पादक है । याचिकाकर्ता की स्थिति के विषय में कोई विवाद नहीं है । अतः प्राधिकारी ऐसा मानते हैं कि श्री कृष्ण पेपर मिल्स एंड इन्डस्ट्रीज लिंग ही घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करता है ।

(ज.) सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य और पाटन संबंधी मुद्दों की जांच

9. प्राधिकारी ने अधिनियम के खण्ड 9 (।) सी के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी । निम्नलिखित निर्यातकों/आयातकों से जवाब प्राप्त हुए थे:-

निर्यातक

- i. मैसर्स जूजो थर्मल लि. फिनलैंड
- ii. मैसर्स जापान पल्प एण्ड पेपर जीएमबीएच, जर्मनी
- iii. मैसर्स, पेपियर फैबरिक ऑगस्ट कोइलेर एजी जर्मनी
- iv. मैसर्स, मितसुबिशी हाइटैक पेपर, जर्मनी

आयातक

मैसर्स रेशनल बिजनैस कार्पोरेशन दिल्ली

10. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत निवेदन

(i) यूरोपियन यूनियन के निर्यातक भारतीय बाजार में थर्मल सैन्सिटिव पेपर का पाटन करते हुए पाए गए। घरेलू उद्योग यूरोपियन यूनियन से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास जाने के लिए बाध्य हो गए, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यूरोपियन यूनियन से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की। यूरोपियन यूनियन से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद भी आयातकों ने पाटन की गति ज्यादा तीव्र कर दी। उसके बाद विभिन्न निविष्टियों के मूल्यों में वृद्धि होने के कारण उत्पाद के उत्पादन मूल्य में महत्वपूर्ण बढ़ोत्तरी हुई, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति हुई।

(ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यूरोपियन यूनियन में सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को और भारत में यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधि मंडल को भी प्रश्नावली भेजी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि केवल मैसर्स जूजो थर्मल लिंगों ने ही प्राधिकारी को जवाब दिया है, परन्तु वह भी पूर्ण नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि मौजूदा जांच के संबंध में कोइहलेर कम्पनी ने कोई जवाब नहीं दिया है।

(iii) जूजों थर्मल ने अपने जवाब में यह कहा है कि "लायसेंस धारियों के साथ कम्पनी के वैध लायसेंस करार के अनुसार कम्पनी की मानक नीति और गोपनीयता को बनाए रखने के उद्देश्य से कम्पनी लागत संबंधी सूचना नहीं देती है।" ऐसा स्पष्ट दर्शाया गया है कि कम्पनी न तो उत्पाद मूल्य देती है और न ही देने की इच्छा रखती है। कम्पनी ने जानबूझ कर इस सूचना को रोका है। उत्पादन की लागत एक बहुत कठिन सूचना है, जिसकी अनुपस्थिति में सारे जवाब को निरस्त करना ठीक माना जाता है। अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी कारण से भी कम्पनी को इस कमी को पूरा करने का अन्य अवसर प्रदान नहीं करते हैं।

(iv) फिनलैंड से निर्यातों के संबंध में सामान्य मूल्य यूरोपियन यूनियन के निर्यातों के बिक्री मूल्य के संदर्भ में निर्धारित किए जाने अपेक्षित हैं। फिनलैंड के मूल्यों के साथ केवल तुलना किया जाना पर्याप्त नहीं है। यदि निर्यातक फिनलैंड के संबंध में सूचना प्रदान करता है तो केवल इसी कारण से सूचना अपर्याप्त हो जाती है।

(v) कम्पनी के संबंध में केवल फायदा होना पर्याप्त नहीं है। घरेलू बाजार में बिक्री नियमों के अनुबंध-1 के अन्तर्गत उपलब्ध किए जाने वाले 80 : 20 परीक्षणों को पास करना आवश्यक है।

(vi) क्योंकि यूरोपियन यूनियन के निर्यातक, निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं करते हैं, इसलिए ऐसा निवेदन है कि उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना जैसे - यांचिकाकर्ता द्वारा प्रदान किए गए आंकड़ों के आधार पर ही सामान्य मूल्य का निर्धारण कर लें। यूरोपियन यूनियन के निर्यातकों द्वारा पहले दावा किए सामान्य मूल्य का कच्चे माल के मूल्यों में परवर्ती वृद्धियों को ध्यान में रखते हुए उत्पादन मूल्य में हुई अन्य वृद्धियों को अलग रखते हुए सामान्य मूल्य निर्धारण किया गया है। उसके आगे हमने यूरोपियन यूनियन में सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन के मूल्य अनुमानों के आधार पर कर लिया है। ऐसा निवेदन किया जाता है कि एसजीए और लाभ जोड़ने के बाद का उत्पादन मूल्य यूरोपियन यूनियन में सामान्य मूल्य का अच्छा संकेतक माना जा सकता है।

(vii) हमने पहले ही विस्तृत सूचना प्रदान की है जो यह दर्शाती है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पहले जाच की गई अवधि के बाद थर्मल सैन्सिटिवपेपर की उत्पादन लागत में कच्चे माल में और ईंधन के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण पर्याप्त वृद्धि हुई । हम निवेदन करते हैं कि इन लागत मूल्यों में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य का परिकलन किया जाना अपेक्षित है ।

(viii) जैसाकि घरेलू उद्योग द्वारा पहले निवेदन किया गया है और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया है कि चीन से संबंधित अन्य मामले में वर्गमीटर के अनुसार : की गई गणना निर्यात मूल्य की अनुपयुक्त गणना होगी । हम दोहराते हैं कि निर्यात मूल्य केवल सामग्री के वजन के अनुसार ही निर्धारित किया जा सकता है । अतः यह अनुरोध है कि इस मामले में पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन की गणना केवल सामग्री के वजन के अनुसार की जाए ।

(ix) क्योंकि घरेलू उद्योग भारी-भरकम गोलों की अधिकतम बिक्री करता है और क्योंकि केवल भारी-भरकम गोलों के लिए ही अक्षति मूल्य निर्धारण किया जाता है, ऐसा निवेदन है कि निर्यात मूल्य केवल भारी-भरकम गोलों के लिए परिकलित किया जाना अपेक्षित है । अन्य प्रकार के थर्मल सैन्सिटिव पेपर के किसी निर्यात में निर्यात मूल्य और भूमिगत मूल्य गणना से रहित होना चाहिए ।

11. मैसर्स पेपियर फैब्रिक ऑगस्ट कोइहलेर एजी, जर्मनी द्वारा किए गए निवेदन:-

(i) घरेलू उद्योग की याचिका जिसमें पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा की जानी है, कोइहलेर के विरोध में नहीं है और कथित याचिका के साथ दायर किए गए अनुबंध "एफ" में कोइहलेर का नाम ज्ञात निर्यातकों के रूप में भी नहीं लिखा गया है, अतः याचिका में निहित आरोप कोइहलेर के खिलाफ नहीं जाते हैं और घरेलू उद्योग द्वारा कोइहलेर थर्मल सैन्सिटिव पेपर को पाटन के लिए दोषी नहीं माना गया है ।

(ii) घरेलू उद्योग का भरोसा डीजीसीआई एंड एस पर न होकर गौण स्रोत पर है । गौण स्रोत से संचयित उदिष्ट आंकड़े गलत एवं अप्रमाणित हैं, इसलिए इन गौण स्रोतों पर गलत सूचना देने के लिए कोई जिम्मेदारी तय नहीं की जा सकती । इसके अतिरिक्त गौण स्रोतों से लिये गये उदिष्ट आंकड़े बिना किसी कारण से गोपनीय रखे गए हैं ।

(iii) जहाँ तक कोइहलेर का संबंध है कोइहलेर के उत्पाद का निर्यात मूल्य याचिकाकर्ता द्वारा एकपक्षीय रूप से निर्धारित मूल्य परिकल्पित निर्यात मूल्य की तुलना में विशेष रूप से अधिक है ।

(iv) लाभ एवं हानि की सूची पर आधारित और कोइहलेर द्वारा दी गई अन्य सूचनाएं यह दर्शाती हैं कि कोइहलेर उचित लाभ ले रहा है क्योंकि उनका घरेलू विक्रय मूल्य भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्यात मूल्य से कम है और कोइहलेर द्वारा भारत में सम्बद्ध वस्तुओं का कोई पाटन नहीं हो रहा है ।

(v) आरोप है कि यूरोपियन यूनियन (अथवा संसारभर) में सामग्री का मूल्य बढ़ गया है, के समर्थन में वास्तव में कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

(vi) घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात मूल्य की गणना एक अज्ञात आयातक की एकल इन्वायस के आधार पर निर्धारित की गयी है और इस एकल इन्वायस को गोपनीय रखा गया।

(vii) किसी विश्वसनीय साक्ष्य को अलग रखते हुए ऐसा पूर्णतया कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं जो यह दर्शाता हो कि यूरोपियन यूनियन में संबद्ध वस्तुओं के कच्चे माल का मूल्य बढ़ गया है। अतः संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य जैसाकि याचिकाकर्ता द्वारा अनुमान लगाया गया है, पूरी तरह गलत है क्योंकि यह यूरोपियन यूनियन में कच्चे माल के मूल्य में वृद्धि के किसी भी प्रथम दृष्ट्या साक्ष्य पर आधारित नहीं है।

(viii) परिशिष्ट-4 और परिशिष्ट-6 (कोइहलेर का गोपनीय रूपान्तरण) के बीच तुलना प्रथम-दृष्ट्या यह दर्शाती है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं का निर्यात मूल्य जांच अवधि के दौरान बहुत अधिक बढ़ गया है।

12. जूजो थर्मल लिलो फिनलैंड द्वारा प्रस्तुत निवेदन

(i) याचिकाकर्ता ने अपनी शिकायत में सामान्य मूल्य परिकलित किया है जो उनके उत्पादन के बढ़े हुए मूल्य पर आधारित है और जो कानून एवं नियमों के विपरीत है। जैसाकि प्राधिकारी को सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए निर्यातक देश में घरेलू बिक्री मूल्य पर निर्भर करने की आवश्यकता है।

(ii) मौजूदा मामले में फिनलैंड की स्थिति में सामान्य मूल्य जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा प्रभारित संबद्ध वस्तुओं के घरेलू विक्रय मूल्य पर आधारित होना चाहिए।

(iii) निर्यातक मैसर्स जूजो थर्मल लिलो फिनलैंड और मैसर्स रेशनल बिजनैस कार्पोरेशन, जो संबद्ध वस्तुओं के भारत में आयातक है, के बीच कोई साझेदारी अथवा प्रतिपूरक व्यवस्था नहीं थी।

(iv) क्योंकि उनके द्वारा प्रभारित संबद्ध वस्तुओं का घरेलू विक्रय मूल्य भारत में निर्यात मूल्य से कम है, उनके द्वारा कोई पाटन नहीं किया गया है।

(v) हम फिनलैंड में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री पर उचित लाभ प्राप्त कर रहे हैं जो हमारी कुल कारोबार का लगभग 95% हिस्सा है। मैसर्स जूजो थर्मल लिलो की ऑडिट की गई बैलेन्स शीट और आय सूची दर्शाती है कि कम्पनी को पर्याप्त लाभ हो रहा है।

13. मैसर्स जापान पत्प एंड पेपर जीएमबीएच

मैसर्स जापान पत्प एंड पेपर जीएमबीएच, जर्मनी ने यह सूचित किया है कि वे जूजो थर्मल ओवाई, फिनलैंड के बिक्री एजेन्ट हैं और उन्होंने जांच अधिक के दौरान किसी विनिर्माता की ओर से सीधे किसी थर्मल पेपर का निर्यात नहीं किया ।

14. मैसर्स, मितसुब्सीहाइटैक पेपर, जर्मनी ने जवाब भेजने के लिए समय मांगा जिसको प्राधिकारी ने भी अनुमति प्रदान कर दी थी । फिर भी कथित निर्यातक से प्रकटन के जारी होने से पूर्व कोई जवाब प्राप्त नहीं हुआ था । प्रकटन के जवाब में निर्यातक ने उनके द्वारा उत्पादित थर्मल सैन्सिटिव पेपर की गुणता के बारे में निवेदन किया है । उनके द्वारा किए गए अन्य निवेदन निम्न प्रकार से हैं—

- (i). थर्मल पेपर निवेदन में उल्लिखित क्षेत्र से अधिक विस्तृत क्षेत्र के लिए प्रयोग किए जाते हैं । न केवल फैक्स में परन्तु बढ़ते हुए नौन-फैक्स थर्मल उपयोगों के लिए भी प्रयोग किए जाते हैं । श्री कृष्णा द्वारा हमारे पेपर का कोई स्थानापन्न उपलब्ध कराना संभव नहीं है । केवल फैक्स रोल के प्रयोजनार्थ हम पेपरों को अतुलनीय मानते हैं ।
- (ii) हमे अब भी विश्वास है कि एमपीएफ ने भारत में काई भी थर्मल पेपर पाटन मूल्यों के साथ आपूर्ति नहीं करवाया और याचिकाकर्ता द्वारा तीव्रगति से होने वाले पाठ्य के विषय में किए गए निवेदन का पूरी तरह से विरोध किया है ।
- (iii) आयातों में निर्बाध वृद्धि थर्मल पेपरों के सामान्य प्रयोग में वृद्धि के कारण है । विश्वव्यापी बाजार वर्ष में 5-10% तक बढ़ रहे हैं । श्री कृष्णा को बाजार में वृद्धि होने के कारण अपनी उत्पाद की बिक्री बढ़ानी चाहिए ।
- (iv) पाटनरोधी शुल्क की प्रस्तावित राशि बहुत है और थर्मल पेपर के लिए विश्व के किसी भाग में इतनी नहीं देखी जाती है ।
- (v) 0,03842 अमरीकी डालर/ 100 एम-2 का वर्तमान पाटनरोधी शुल्क पहले ही बहुत अधिक है और हमें स्वीकार्य नहीं है (विशेष रूप से इस बात पर विचार करते हुए कि पाटनरोधी शुल्क के अलावा आयात लागत में लगभग 60% और बढ़ गयी है ।)
- (vi) थर्मल पेपरों के ग्रेड जोकि भारत की भविष्य-कालीन नई टौक्नोलॉजी और उपयोगों के लिए अनिवार्य है इतने अधिक महंगे हो जाएंगे कि भारत उन तकनीकों और लाभों को नहीं प्राप्त सकेगा ।

15. मैसर्स, रैशनल बिजनेस कार्पोरेशन, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत निवेदन

याचिकाकर्ता ने अपनी शिकायत में सामान्य मूल्य परिकलित किया है जो उनके उत्पादन के बढ़े हुए मूल्य पर आधारित है और जो कानून एवं नियमों के विपरीत है। ऐसा केवल तभी होता है जब निर्यातक देश में संगत घरेलू विक्रय मूल्य अनुपलब्ध हो तब सामान्य मूल्य निर्धारण के अन्य माध्यमों का सहारा लिया जा सकता है जैसाकि नियमों के अन्तर्गत निहित है।

16. प्राधिकारी द्वारा जांच

(क) सामान्य मूल्य

(i) मैसर्स जूजो थर्मल लिंग फिनलैंड ने भारत में अपने निर्यातों के बारे में सूचना भेजी है। तथापि उन्होंने परिशिष्ट-1 में अपेक्षित सौदे-वार घरेलू विक्रयों का पूरा वररण और परिशिष्ट-8 में अपेक्षित संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत के विषय में सूचना नहीं भेजी ताकि जिसके आधार पर प्राधिकारी यह सुनिश्चित कर सके कि क्या घरेलू बिक्री सामान्य है।

(ii) मैसर्स मितसुबिशी हाइटेक पेपर जर्मनी ने जवाब भेजने के लिए समय मांगा था, जिसकी प्राधिकारी ने अनुमति प्रदान कर दी थी। फिर भी कथित निर्यातक से प्रकटन के जारी होने से पूर्व कोई जवाब प्राप्त नहीं हुआ है। निर्यातक ने सामान्य टिप्पणियाँ की हैं। उन्होंने प्रश्नावली में अपेक्षित भारत में निर्यातों की बिक्री, घरेलू बिक्री, उत्पादन के मूल्य और विक्रय मूल्य के ढांचे के संबंध में कोई सूचना भी भिजवाई। प्राधिकारी ने माना है कि निर्यातक जांच के विषय में कोई सहयोग नहीं दे रहा।

(iii) मैसर्स पेपियर फैब्रिक ऑगस्ट कोइलेर एजी, जर्मनी ने घरेलू बिक्री, निर्यात बिक्री, वार्षिक लेखा से संबंधित सूचना देते हुए जवाब दिया है। फिर भी उन्होंने प्रश्नावली में अपेक्षित परिशिष्ट-4, 5, 6, 8, 9 और 10 से संबंधित कोई सूचना नहीं भिजवाई। उत्पादन मूल्य से संबंधित सूचना केवल वर्ष 2000 तक ही भिजवाई थी। जबकि जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2000 से 31 मार्च, 2001 है। निर्यातक ने परिशिष्ट-4, 5, 6 में अपेक्षित भारत में तथा अन्य देशों में निर्यात तथा घरेलू बिक्री के लिए विक्रय मूल्य संरचना से संबंधित सूचना भी नहीं भिजवाई। निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा मांगे गए कथित उत्पाद के विनिर्माण में मूल्यों के आबंटन से संबंधित विस्तृत सूचना भी नहीं भिजवाई। प्राधिकारी ने अपने पत्र दिनांक 29.1.2002 के द्वारा सभी सूचना तथा कुछ अन्य सूचना भी मांगी है परन्तु निर्यातक ने कोई जवाब नहीं दिया। निर्यातक को भिन्न-भिन्न परिशिष्टों के संबंध में भेजी गई सूचना के अगोपनीय रूपांतरण भेजने की भी मांग की है। प्राधिकारी ऐसा पाते हैं कि निर्यातक ने प्रश्नावली के विभिन्न परिशिष्टों की अगोपनीय सूचना भी नहीं भिजवाई। ऐसा घरेलू उद्योग द्वारा मार्च, 2002 को आयोजित की गई मौखिक सुनवाई के अनुसरण में उनके निवेदनों में संकेत किया गया था। निर्यातक ने उसका भी जवाब नहीं दिया। प्राधिकारी ऐसा मानते हैं कि निर्यातक ने जांच में किसी भी तरह से सहयोग नहीं किया।

(iv) इसलिए प्राधिकारी को सामान्य मूल्य के बारे में नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना पर विश्वास करने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा यथा प्रस्तुत अत्युत्तम उपलब्ध सूचना पर उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर ई.यू. के सभी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। ऐसा करते समय प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना जिसकी प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है, के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों पर कच्ची सामग्री की लागत, उपयोगिताओं की लागत और अन्य खर्चों पर विचार किया है। उत्पादन की लागत का आकलन उत्पादन के इष्टतम स्तर पर किया गया है।

(ख) निर्यात कीमत

(i) मैसर्स पेपियर फैब्रिक आगस्ट कोइहलेर ए.जी. जर्मनी ने भारत को निर्यात बिक्रियों, समुद्री भाड़े, बिक्रियों पर कमीशन से संबंधित सूचना प्रस्तुत की है जिस पर विचार किया गया है। अन्य समायोजनों के संबंध में सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है जिसकी अनुमति अन्तर्देशीय परिवहन के लिए 2%, पत्तन खर्चों 2%, पैकिंग 1% की दर पर दी गई जै जैसाकि याचिकाकर्ता द्वारा दावा किया गया है, निर्यात बिक्रियों पर 5% वार्षिक की दर पर 60 दिन (औसत) का समायोजन किया गया है क्योंकि विभिन्न अवधियों के लिए भारतीय उपभोक्ताओं को दी गई छूट को निर्यात मद सूची में दर्शाया गया है। याचिकाकर्ताओं ने बताया है कि वर्गमीटर के अनुसार निर्यात मूल्य की गणना से अनुचित गणना होगी और उन्होंने वजन के अनुसार निर्यात मूल्य का निर्धारण करने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी ने वजन के अनुसार भारी-भरकम गोलों में संबद्ध वस्तु की बिक्रियों के निर्यात मूल्य पर विचार किया है। मैसर्स पेपियर फैब्रिक आगस्ट कोइहलेर एजी जर्मनी के लिए निर्धारित कुल निर्यात कीमत डीएम *** /किग्रा० है।

(ii) मैसर्स जूजो थर्मल लि�०, फिनलैंड ने निर्यात बिक्रियों, समुद्री भाड़े, बीमा संबंधी सूचना प्रस्तुत की है। जिस पर विचार किया गया है। अन्य समायोजनों के संबंध में सूचना के समर्थन में कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं। अतः अन्तर्देशीय परिवहन के लिए 2%, पत्तन खर्चों 2%, पैकिंग 1% और 60 दिन के लिए शेष लागत 5% वार्षिक दर से समायोजित की गई है। मैसर्स जूजो थर्मल लि�० के लिए भारी भरकम गोलों में ही संबद्ध वस्तुओं के कुल निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है।

(iii) अन्य सहयोगी निर्यातकों के संबंध में प्राधिकारी ने न्यूनतम निर्यात कीमत को साक्ष्य माना है और कुल निर्यात कीमत निर्धारित करने के लिए उपर्युक्त के अनुसार सभी समायोजन किए हैं।

पाटन मार्जिन

प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन निर्धारण पर लागू होने वाले उन सिद्धांतों को अपनाने की सुसंगत नीति का पालन किया जो पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-। में दिए गए हैं । पाटन मार्जिन का निर्धारण उक्त नियमावली के अनुबंध-। के पैरा 6 में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार निर्यात कीमत और साधारण मूल्य की तुलना करके किया गया है । यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर अर्थात् कारखाना द्वारा स्तर पर की गयी है । प्राधिकारी ने मै. जूजो थर्मल लि. और मै. ऐशनल बिजनेस कार्पोरेशन द्वारा किए गए इस निवेदन पर भी विचार किया कि पाटनरोधी शुल्क केवल वर्ग मीटर के अनुसार ही लगाया जाए क्योंकि यह उत्पाद केवल वर्ग मीटर के अनुसार ही बेचा जाता है । प्राधिकारी ने यह देखा कि थर्मल सेंसिटिव पेपर विभिन्न जीएसएम में रखा जाएगा । अतः प्राधिकारी ने यही उचित माना कि सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य का निर्धारण केवल वजन के अनुसार ही किया जाए । यथोपरि निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य के आधार पर प्राधिकारी ने यूरोपियन यूनियन से अधोलिखित निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन का आकलन निम्नानुसार किया ।

क्रमांक	निर्यातक	पाटन मार्जिन (%)
1	मै. पापियरंफाब्रिक ऑगस्ट कोइहलेर, ए. जी. जर्मनी	53.07%
2	जूजो थर्मल लि. फिनलैंड	36.97%
3	ई.यू के अन्य सभी निर्यातक	103.97%

जी. हानि और हानि का खतरा

17. पाटनरोधी नियमावली का नियम 11 इस प्रकार है:-

क्षति का निर्धारण:

- (1) निर्दिष्ट देशों से हुए आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे अपने निष्कर्ष दर्ज करेंगे कि भारत में होने वाले ऐसे आयातों से भारत में स्थापित किसी उद्योग को वास्तविक क्षति होती है अथवा क्षति का खतरा उत्पन्न होता अथवा किसी उद्योग को स्थापित करने में बाधा आती है;
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के खतरे और घरेलू उद्योग की स्थापना में आने वाली वास्तविक बाधा और पाटित आयातों की मात्रा, और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर इसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, इन नियमों के अनुबंध II में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार पाटित आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का मूल्यांकन करेंगे ।

18. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में निर्धारित क्षति के आकलन संबंधी सिद्धांत में व्यवस्था है कि:-

i क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव दोनों की तथ्यात्मक जांच शामिल होगी ।

ii पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उपरोक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में अथवा समग्र रूप में पाटित आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है । नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमतों में महत्वपूर्ण कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से महत्वपूर्ण सीमा तक अन्यथा कीमतों में कमी करना है अथवा कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण सीमा तक हो गयी होती ।

19. घरेलू उद्योग के विचार:

(क) घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमतोपयोग और बिक्री में वृद्धि हुई है । किन्तु इस बात पर विचार करते हुए इस तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिए कि घरेलू उद्योग ने वाणिज्यिक उत्पादन केवल मार्च 1997 में ही आरंभ किया था अतः घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता का उपयोग बढ़ाने के लिए काफी गंभीरता से प्रयास किए थे । उत्पादन में वृद्धि होने से घरेलू उद्योग को अपनी यूनिट लागत घटाने हमें अवश्य मदद मिली थी । फिर भी घरेलू उद्योग उत्पादन की पूरी लागत वसूलने और उचित लाभ अर्जित करने में असमर्थ था । अतः उत्पादन और बिक्री की मात्रा बढ़ने से भी घरेलू उद्योग को अपने निवेश पर समुचित लाभार्जन करने में कोई सहायता नहीं मिली ।

(ख) घरेलू उद्योग को, उत्पादन लागत बढ़ जाने से कारण अपना विक्रय मूल्य बढ़ाना पड़ा । फिर भी घरेलू उद्योग को कीमतों में इतनी वृद्धि करने से रोका गया जिससे कि वह अपनी पूरी उत्पादन लागत वसूल कर पाता और अपने निवेश पर उचित लाभ कमा पाता ।

(ग) आयातित माल की पहुंच कीमत विक्रय मूल्य से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमतों में भारी कटान होता है ।

(घ) आयातित माल का तटागत मूल्य घरेलू बाजार को उत्पादन लागत और उचित विक्रय मूल्य से बहुत कम है, जिससे भारतीय बाजार में गंभीर मूल्य संकुचन होता है और गिरावट आती है ।

(ङ.) घरेलू उद्योग को स्टॉक बढ़ता जा रहा है ।

(च) घरेलू उद्योग के सामने नकदी प्रावह की गंभीर समस्या उत्पादन हो गयी है ।

(छ) नामित प्राधिकारी ने इस बात को पहले ही मान लिया है कि यूरोपीय संघ/जापान से होने वाले पाटित आयात के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । हमने नामित प्राधिकारी को काफी सूचनाएं

उपलब्ध कराई हैं जिनसे यह बात स्पष्टतया सिद्ध हो जाती है कि यूरोपीय संघ से आयातों के मामले में पाटनरोधी शुल्क लगा दिए जाने के बाद भी यूरोपीय संघ से पाटित आयात के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होना जारी है।

(ज) हमने प्राधिकारी को इस बात के सबूत पहले ही दे दिए हैं जिससे यह पता चलता है कि आयातक का विक्रय मूल्य आयातित माल की पहुंच कीमत से कम है, इससे यह बात निसंदेह स्थापित हो जाती है कि या तो (क) निर्यातक और आयातक के बीच कोई क्षति पूर्ति समझौता है, अथवा (ख) आयातकों आयात मात्रा की गलत सूचना देने का मार्ग अपनाया है।

(झ) इसके अलावा, भारत में याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु का एक मात्र उत्पादक है और आयात केवल चीन और यूरोपीय संघ से ही हो रहे थे। इस प्रकार घरेलू उद्योग द्वारा जांच अवधि में कीमत रु.109130/मी.टन या रु.6.98/वर्ग मी.टन से अधिक किए जाने का एक मात्र कारण यही माना जा सकता है कि आयात की परिकलित औसत पहुंच कीमत रु.109130/मी.टन या रु.6.98/वर्ग मीटर से कम थी।

(थ) निर्यातक और रैशनल बिजनेस कार्पोरेशन के बीच कोई क्षति पूर्ति समझौता न होने के संबंध में हमने अनुरोध किया था कि मै. रैशनल बिजनेस कार्पोरेशन से कहा जाए कि वह भारत में अपने थर्मल सेसिटिव पेपर की बिक्री के पूरे आंकड़े दें।

20. मै. पारियर फैब्रिक ऑगस्ट कोइलेर ए जी जर्मनी का निवेदन

- (i) मात्र अविश्वसनी आरोप के अलावा निर्यात और आयातक के बीच कोई क्षति पूर्ति समझौता होने का कोई रिकॉर्ड नहीं है।
- (ii) घरेलू उद्योग को हो रही वास्तविक क्षति और घरेलू उद्योग/याचिकाकर्ता द्वारा दिखाए गए कथित पाटित आयातों के बीच कोई सार्थक कारणात्मक संबंध विद्यमान नहीं है।
- (iii) इस आरोप कि निर्यातक और आयातक के बीच कोई क्षतिपूर्ति समझौता जरूर होगा, का भी आधार वही निर्यातक का कथित बीजक है।

21. मै. जुजो थर्मल लि. का निवेदन

याचिकाकर्ता का यह दावा कि उनकी क्षति और बढ़ी है केवल इसी एक तथ्य पर आधारित है कि घरेलू उद्योग उस अनुपात में अपनी विक्रय मूल्य नहीं बढ़ा सका जिस अनुपात में उसकी उत्पादन लागत बढ़ी थी। जैसा कि ऊपर पहले ही कहा जा चुका है याचिकाकर्ता का यह दावा याचिका में दी गई जानकारी और आंकड़ों से सिद्ध नहीं होता है।

22. मै. रीजनल बिजनेस कार्पोरेशन का निवेदन

- (i) याचिकाकर्ता की यह शिकायत ठीक नहीं है कि निर्यातक ने उस अनुपात में अपना विक्रय मूल्य नहीं बढ़ाया जिसमें सारी दुनिया में कच्चे माल की कीमत बढ़ी हैं क्योंकि जांच अवधि में और दो

वर्षों में कीमतें काफी बढ़ी हैं। जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में वृद्धि 1% से भी कम थी जबकि निर्यात का सी आइ एवं मूल्य 47% बढ़ा था।

(ii) जांच अवधि के दौरान घरेलू विक्रय मूल्य पिछले साल की तुलना में 2.49% बढ़ा जबकि उनकी उत्पादन लागत 1% से भी कम बढ़ी थी।

(iii) याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि उत्पाद पहुंच कीमत से कम कीमत पर बेचा जा रहा है जिससे भारतीय बाजार में भारी मूल्य संकुचन और गिरावट हुई है।

(iv) भारत में संबद्ध वस्तु खरीद मूल्य के मुकाबले कम कीमत पर बेचे जाने की एक मात्र घटना से यह सिद्ध नहीं होता कि निर्यातक और आयातक के बीच कोई क्षतिपूर्ति समझौता विद्यमान है।

(v) हम इस बात पर पुनः बल देते हैं कि संबद्ध वस्तु के लिए हमारा किसी भी निर्यातक से कोई कथित क्षतिपूर्ति समझौता नहीं है।

(vi) याचिकाकर्ता ने पाटन मार्जिन की गणना दो विभिन्न तरीकों से की है। पहले तरीके के अनुसार निर्यात कीमत गौण स्रोतों के आंकड़ों पर आधारित है जिससे अधिकतम पाटन मार्जिन 59.11% आता है जो मूल मामले में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन से कम है अतः पाटन मार्जिन में कोई वृद्धि नहीं है।

(vii) दूसरी पद्धति में, आयातक के एक मात्र बीजक के आधार पर निर्यात मूल्य परिणित किया गया है और आरोप लगाया गया है कि संबद्ध वस्तु पहुंच मूल्य से कम कीमत पर बेची जा रही है। जैसकि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, कोई सहयोग या क्षतिपूर्ति समझौता सिद्ध किए बिना निर्यात कीमत निकालने का यह तरीका गलत है और पाटनरोधी नियमावली के प्रावधानों के विपरीत है। फिर भी हमारे द्वारा इसके साथ दिए गए आंकड़ों से यह स्पष्टतया देखा जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए वसूल की गई कीमत उसकी पहुंच कीमत से कम नहीं है। अतः निर्यात मूल्य निकालने का यह तरीका हमारे मामले में अन्यथा भी लागू नहीं होता।

(viii) याचिकाकर्ता का यह दावा कि क्षति और बढ़ी है केवल इसी एक कारक पर आधारित है कि घरेलू उद्योग अपना विक्रय मूल्य उस अनुपात में नहीं बढ़ा सका जिसमें उत्पादन लागत बढ़ी थी। जैसाकि ऊपर पहले ही उल्लेख किया जा चुका है उनका यह दावा उनके द्वारा दी गयी सूचना और आंकड़ों से सिद्ध नहीं होता। इसके अलावा, याचिका में दिए गए क्षति के अन्य मांदंड भी इस दावे का समर्थन नहीं करते।

(ix) इस प्रकार संबद्ध वस्तु का कोई पाटन नहीं हुआ है, घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है और इन दोनों के बीच कोई कारणात्मक संबंध भी नहीं है।

23. प्राधिकारी द्वारा जांच

भारत में घरेलू उद्योग पर आयात के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार ऐसे अन्य सूचकों पर विचार किया जो उद्योग की स्थिति को प्रभावित करते हैं जैसाकि पाटित आयात की मात्रा, घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव मांग में उनका अंश, पाटन की मात्रा और मार्जिन, उत्पादन, क्षमतोपयोग बिक्री की मात्रा अंतिम स्टॉक शुद्ध बिक्री वसूली नकदी प्रवाह लाभप्रदता, रोजगार, मजदूरी आदि।

(i) आयात की मात्रा

प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयात के बारे में, निर्यातकों और एकल आयातक द्वारा दी गई सूचना के अलावा, डी जी सी आई एंड एस, कोलकाता, सीमाशुल्क प्राधिकारी गौण स्रोत नामक विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी पर विचार किया। प्राधिकारी ने यह पाया कि जांच अवधि के दौरान टी एस पी के आयातों के विषय में कोई एक स्रोत पूरी और सही जानकारी नहीं दे सका। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह देखा कि जांच अवधि के दौरान यूरोपीय संघ से 366.57 मी.टन का आयात हुआ है। प्राधिकारी ने पाया कि ये आयात जांच अवधि में हुए कुल आयात का 86.53% हैं। थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयात निम्नानुसार थे:-

(आयात मी.टन)

देश	1998-99	1999-2000	2000-2001 जांच अवधि
यूरोपीय संघ	4.28	260.54	366.57
चीन	0.00	0.00	32.63
अन्य	74.91	158.71	24.43
योग	79.19	419.25	423.63

अतः प्राधिकारी यह समझते हैं कि संबद्ध देशों/क्षेत्रों से पाटित निर्यात काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि पाटित निर्यात समग्र रूप से बढ़ा है। पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों/क्षेत्रों से आयात में 40.69% की वृद्धि हुई है।

ii) मांग में भाग

भाग% में	1998-99	1999-2000	2000-2001 जांच अवधि
घरेलू उद्योग	91.07	71.70	76.89
यूरोपीय संघ	0.48	17.58	19.98
अन्य	1.48	10.72	3.13

iii) उत्पादन और क्षमता उपयोग

नोट: घरेलू उद्योग का उत्पादन और क्षमता उपयोग इस प्रकार रहा है:-

	1998-99	1999-2000	2000-2001*
क्षमता	100	100	100
उत्पादन	100	140.17	196.24
क्षमता उपयोग	100	140.17	196.24
बिक्री	100	131.54	174.6

*नोट: सूचकांक संख्याएं 1998-99 में 100 मानी गई हैं।

iv) अंतिम स्टॉक

घरेलू उद्योग के पास अंतिम स्टॉक निम्नलिखित था:-

वर्ष	अंतिम स्टॉक मी.टन
1998-99	100
1999-2000	808.31
2000-01(जांच अवधि)	1466.97

*नोट सूचकांक संख्याएं 1998-99 में 100 मानी गई हैं।

v) विक्रय मूल्य

घरेलू उद्योग का विक्रय मूल्य निम्नलिखित रहा है:-

वर्ष	विक्रय मूल्य रु०/वर्ग मीटर
1998-99	100
1999-2000	144.28
2000-2001(जांच अवधि)	147.88

*नोट सूचकांक संख्याएं 1998-99 में 100 मानी गई हैं।

(vi) मूल्य कटान

प्राधिकारी पाते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की औसत शुद्ध बिक्री वसूली की तुलना में संबद्ध देशों/क्षेत्रों से संबद्ध वस्तु के आयात की औसत पहुंच कीमत से पर खास मूल्य कटान नहीं दिखाई देता। फिर भी प्राधिकारी ने यह देखा कि आयात की मात्रा अधिक होने के कारण मूल्य कटान हुआ है क्योंकि इन आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की औसत बिक्री वसूली से काफी कम थी।

(vii) मूल्य संकुचन

प्राधिकारी ने देखा कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग अपना विक्रय मूल्य रु. *** प्रति किग्रा तक बढ़ा सका था। फिर भी यह देखा गया कि घरेलू उद्योग अपने विक्रय मूल्य को उस स्तर तक बढ़ाने में समर्थ नहीं था जिससे कि इसे उत्पादन लागत की पूरी वसूली हो पाती और समुचित लाभ मिलता। संबद्ध देशो/क्षेत्रों से संबद्ध वस्तु की आयात की पहुंच कीमत रु.*** प्रति किग्रा रही हैं जो कि उत्पादन लागत से बहुत कम है। प्राधिकारी ने देखा कि मूल्य कटान % तक है।

viii) लाभदेयता

वर्ष	उत्पादन लागत	विक्रय मूल्य *	लाभ/हि.नि
1998-99	100	100	(-)100
1999-00	117.25	144.28	(-)64.32
2000-2001(जांच अवधि)	118.23	147.88	(-)60.17

* नोट: सूचकांक संख्याएं 1998-99 में 100 मानी गई हैं। (रु.प्रति वर्ग मीटर)

ix) रोजगार

प्राधिकारी ने देखा कि घरेलू उद्योग में रोजगार के स्तर में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।

x) मजदूरी

प्राधिकारी ने पाया कि कर्मचारियों की मजदूरी में मामूली वृद्धि हुई है।

xi) नकदी प्रवाह

प्राधिकारी ने देखा कि घरेलू उद्योग में नकदी प्रवाह की स्थिति निम्नानुसार थी:-

वर्ष	नकदी प्रवाह
1998-99	(-)100
1999-2000	(-)131.7
2000-2001(जांच अवधि)	(-)83.84

नोट: सूचकांक संख्याएं 1998-99 में 100 मानी गई हैं।

24. अंतिम निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने हानि संबंधी सभी सूचकों को ध्यान में रखा है। इसमें सभी संबंधित तथ्य सम्मिलित हैं यथा पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में उनकी कीमतों पर प्रभाव

और घरेलू उत्पादकों पर बाद में पड़ने वाला प्रभाव उत्पादन क्षमता उपयोग, लाभ देयता शुद्ध बिक्री वसूली आदि/घरेलू उद्योग के लिए समान वस्तु हेतु अक्षतिकर कीमत निर्धारित करते समय, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने वाले घरेलू उद्योग के लिए सामान्यीकृत सर्वाधिक खपत मानदंडों और जांच अवधि के दौरान कच्चे माल की वास्तविक कीमत को ध्यान में रखते हुए अनुकूलतम उत्पादन लागत पर विचार किया है। क्षति मार्जिन निकालते समय भी प्राधिकारी ने उचित विक्रय अथवा अक्षतिकर मूल्य तय करने हेतु सर्वोत्तम क्षमता उपयोग को ध्यान में रखा है।

25. उपर्युक्त सभी सूचकों पर ध्यान देने के बाद, प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण करते समय क्षति के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं-

- i) समग्र रूप में भी और कुल मांग के संबंध में भी पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है।
- ii) घरेलू उद्योग को संबद्ध देश/क्षेत्र से पाटित आयातों की पर्याप्त मात्रा की बजह से कीमतों में कटौती करने से नुकसान हुआ है।
- iii) घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के परिणाम स्वरूप कीमत कम करने से नुकसान हुआ है। संबद्ध देश/क्षेत्र से संबद्ध माल के आयातों का औसत पहुंच मूल्य उत्पादन लागत से काफी कम था। इससे घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत को लाभकारी स्तर तक नहीं पहुंचा सका।
- iv) याचिकाकर्ता के पास थर्मल सेंसिटिव पेपर का परिष्कृत माल था जो वित्तीय वर्ष 1999-2000 के अंत के माल से ~~81.53%~~ अधिक था। प्राधिकारी यह पाते हैं कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के अंत में थर्मल सेंसिटिव पेपर के अधिक माल के कारण भी वास्तविक क्षति हुई है।
- v) घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग वर्ष 1999-2000 के 53.74% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 75.23% हो गया है और उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण उच्चतर क्षमता उपयोग से रोका गया है।
- vi) संबद्ध देश/क्षेत्र से आयातों की मांग का हिस्सा 19.98% घरेलू उद्योग का 76.89% और जांच अवधि के दौरान अन्य देशों से आयातों की मांग का हिस्सा 3.13% था। घरेलू उद्योग का हिस्सा 71.70% और पूर्ववर्ती वर्ष 1999-2000 के दौरान संबद्ध देश/क्षेत्र का हिस्सा 17.58% था। प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देश/क्षेत्र से हुए आयातों से बाजार हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है।
- vii) घरेलू उद्योग को संबद्ध माल के उत्पादन एवं बिक्री में घाटा होता रहा है क्योंकि बिक्री वसूली उत्पादन लागत से कम रही है।
- viii) घरेलू उद्योग में नकद प्रवाह का नकारात्मक रूख बना हुआ है।

ix) उत्पाद की मांग में गिरावट नहीं आई है और इसलिए घरेलू उद्योग की क्षति में कोई योगदान नहीं दिया है।

26. क्षति का खतरा

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति के खतरे की जांच उपरोक्त नियम के अनुबंध-II के पैरा (vii) के अनुसार की है और निष्कर्ष निकाला कि संबद्ध देश से हुए आयातों में कुल आयातों में 19.98% हिस्सा करने के लिए पिछले वर्ष के दौरान 17.58% मांग के हिस्से के रूप में संपूर्ण अर्थों में वृद्धि हुई है। प्राधिकारी भारत में समान उत्पाद की कीमत को कम करने के बड़े खतरे को रोकने के लिए संबद्ध देशों से इन आयातों पाटित कीमत पाते हैं इसकी बहुत संभावना है कि आयात भारी मात्रा में पाटित कीमतों पर होते रहे जिससे घरेलू उद्योग को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। अतः प्राधिकारी अपने समक्ष उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश/क्षेत्र से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का गंभीर खतरा है।

ज. कारणात्मक संबद्ध

27. प्राधिकारी पाते हैं कि पाटित कीमत पर यूरोपीय संघ से संबद्ध वस्तु के आयातों में भारी वृद्धि से घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की कीमत में कटौती और अत्यधिक कीमत अवमूल्यन हुआ। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के पास परिष्कृत वस्तुओं की माल सूची का निर्माण हुआ। घरेलू उद्योग को हानि इसकी निवल बिक्री वसूली उत्पादन की लागत से कम होने के कारण हुई है। इससे स्पष्ट रूप से यूरोपीय संघ से संबद्ध वस्तु के पाटन से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का पता चलता है। प्राधिकारी यह पाते हैं कि यूरोपीय संघ से संबद्ध वस्तु के पाटन और जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबद्ध है।

झ. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मध्ये

28. प्राधिकारी दोहराते हैं सामान्यतः पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बाजार में एक खुली एवं निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः कायम करना है जो कि देश के सामान्य हित में है।

29. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में घरेलू बाजार में उत्पाद को कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि पाटनरोधी कार्रवाई द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटन रोधी उपाय लागू करने से पाटन प्रक्रियाओं से होने वाले अनुचित लाभ समाप्त होंगे घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा तथा उपभोक्ताओं का संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्पों की उपलब्धता कायम रखने में भी सहायता मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन रोधी उपायों के लागू होने से संबद्ध देश से होने वाले आयात किसी भी तरह से प्रभावित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता भी प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अभी भी दो या इससे अधिक आपूर्ति के स्रोतों को कायम रख सकते हैं।

ज. अंतिम जांच परिणाम

30. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि:

- यूरोपीय संघ से भारत को थर्मल सेंसिटिव पेपर का निर्यात सामान्य मूल्य से कम पर किया गया है।
- भारतीय उद्योग को संबद्ध देशों/क्षेत्र से हो रहे पाटित आयातों के परिणामस्वरूप कीमत कटौती कीमत हास पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि बढ़ी हुई वस्तु सूची वित्तीय घाटे के रूप में वास्तविक क्षति जारी है तथा इसे आगे और क्षति होने का खतरा बना हुआ है।
- घरेलू उद्योग को यह क्षति संबद्ध देश/क्षेत्र से हो रहे पाटित आयातों के कारण हुई है।

31. प्राधिकारी यूरोपीय संघ मूल की अथवा वहां से निर्यातित थर्मल सेंसिटिव पेपर के आयातों पर पाटन रोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश को उचित मानते हैं। पाटनरोधी शुल्क की राशि क्षति मार्जिन के बराबर पाटन मार्जिन से कम होगी जिसे यदि लगाया गया तो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों की पहुंच कीमत के साथ जांच अवधि के लिए याचिकाकर्ता कंपनी के लिए निर्धारित क्षात्र रहित बिक्री कीमत की गई है।

32. यह पाटनरोधी शुल्क यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 4809.10 अथवा शीर्ष 48.11 या सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की पहली अनुसूची के 48.16 के अंतर्गत आने वाले थर्मल सेंसिटिव पेपर के सभी आयातों पर लागू होगा। पाटन रोधी शुल्क निम्नांकित कालम 3 में उल्लिखित राशि तथा यूएस डालर/मी.टन के रूप में आयातों के पहुंच मूल्य के बीच का अंतर होगा।

क्र.सं	देश	(यू.एस डालर प्रति मी.टन)
1	2	3
1	मै. पॉपिएरफैब्रिक कोइलेर ए जी जर्मनी	2947.92
2	मै. जुजो थर्मल लिं.0, फिनलैंड	2947.92
3	यूरोपीय संघ के अन्य सभी निर्यातिक	2947.92

33. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथाआकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3,3क, 8ख, 9 और 9क अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

34. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क और स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th September, 2002

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-dumping investigation in the matter relating to review of anti-dumping duty imposed on imports of Thermal Sensitive Paper originating in or exported from EU – Final Findings.

No. 31/1/2001-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof.

A. PROCEDURE:

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under Rules initiated the review of anti-dumping duty imposed on imports of Thermal Sensitive Paper (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from European Union (hereinafter referred to as subject country/territory) pursuant to the final findings notification no. 25/1/98/ADD dated 3rd March, 2000. This review was initiated vide notification no. 31/1/2001/-DGAD dated 13.9.01.
- (ii) The Designated Authority notified the initiation of the sunset review vide notification no. 31/1/2001/-DGAD dated 13.9.01 with regard to anti-dumping duties imposed on imports of Thermal Sensitive Paper originating in or exported from the subject country/territory. The Designated Authority forwarded a copy of the initiation notification to the known interested parties who were requested to furnished their views, if any, within 40 days from the date of the letter.
- (iii) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known industry association, the domestic industry and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2). The Authority sent questionnaire to the following known exporters:-

Jujo Paper Co. Ltd., P.O. Box No. 92,
P1 – 55, 27501 Kauttua, Finland.

Japan Pulp & Paper GmbH,
Immermannsirasse, 14-16,
402100, Dusseldorf, Germany.

Storta Spazialpapiere GmbH,
Husumer Strasse 12,
29241, Flensburg, Germany.

Mitsubishi Hitek Paper Limited,
Husumer Strasse 12, 24941,
Flensburg, Germany.

(v) The Authority forwarded copy of the public notice to the following known importers and consumers of Thermal Sensitive Paper in India (whose details were made available by the petitioners in the original investigations) in accordance with Rule 6(5) and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.

- ❖ Cantronics Office Equipments Pvt. Limited, Mumbai-400007.
- ❖ Hindustan Sales, Delhi-110006.
- ❖ VI Office Equipments Pvt. Limited, Mumbai-600006.
- ❖ Rational Business Corporation, New Delhi-110052.
- ❖ Hariti Papers Pvt. Limited, Jaipur
- ❖ Vardhman Paper Products, Aurangabad.
- ❖ Vaishano Paper Products, Delhi-6.
- ❖ Sohan Lal Nem Chand Jain, Delhi-110006.
- ❖ Alankar Stationery Mart, Delhi-110006.
- ❖ Modi Hospital Appliances Mfg. Co Limited, Chennai-93.
- ❖ Sohum Industries Pvt. Limited, Mumbai-400002.
- ❖ Tokushu Menor Paper Mfg. Co., Chennai-600066.
- ❖ Haryana Traders P. Limited, Delhi-110006.
- ❖ Shyam Traders, Delhi-110006.
- ❖ Varsha Traders, Mumbai.
- ❖ Asian Coated Paper P. Ltd., New Delhi.
- ❖ The Embassy of Finland, New Delhi-110021.
- ❖ Excell Mark, Chennai-600001.
- ❖ All India Thermal Paper Dealers Association, New Delhi.

- (vi) The Authority forwarded the initiation notification to the Embassies of the Federal Republic of Germany and Finland in India; the European Union, Delegation of the European Commission in India in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to the concerned Embassies, along with a list of known exporters/producers
- (vii) The Authority provided an opportunity to the interested parties to present their views orally in a public hearing on 1.3.2002. All parties presenting views were requested to file written submissions of their views expressed. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;
- (viii) In addition to the known interested parties, responses/information was filed by the following interested parties during the investigation:

M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany.

- (ix) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request;
- (x) Arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt in these findings;
- (xi) In accordance with Rule 16 of the Rules *supra*, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 2nd September, 2002 and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- (xii) The period of investigation (POI) for the present review is 1st April, 2000 to 31st March, 2001.
- (xiii) ***in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY.

3. The views expressed by various interested parties in response to the initiation notification, subsequent to the oral hearing and in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paragraphs herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paragraphs herein below.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

4. Thermal Sensitive Paper is a paper coated with a special mix of chemicals for providing thermal sensitive properties to the base paper. Thermal Sensitive Paper is primarily used for recording messages for electronic equipments where the machine is used to record messages, reports through sensitivity of heat rays. It is primarily used in fax machines. It is also used in ECG Machines and other medical equipments, Seismographic machines, Airlines baggage tagging, tickets, boarding cards etc. TSP is classified under chapter 48 of the Customs Tariff Act. The product does not have a dedicated Customs Classification. However, it generally gets covered under sub-heading 4809.10 i.e. 'Carbon or similar copying paper' of Schedule I of Customs Tariff Act. TSP is also cleared under different sub-headings of heading 4811 and 4816 of the Customs Tariff Classification. These Classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

5. The petitioners have stated that that subject goods are produced in a large number of sizes to meet specific end application. The petitioner largely produces the product in Jumbo rolls, which are then slit to the desired size, primarily by the companies in the market (known as slitters). There is significant price difference between the jumbo rolls and slitted small rolls for specific end use. The goods are imported both in jumbo rolls as also in finished slitted small rolls for specific end use. The product is not having a dedicated custom classification at six-digit level. Therefore, the data of DGCI&S or of the secondary sources is not sufficient to segregate the jumbo rolls with the slit rolls. While the jumbo rolls are invariably imported in the multiples of container loads, the imports of slit rolls are far lower in terms of weight. In view of significant difference in the prices of the jumbo rolls and slit rolls the petitioner has requested that the comparison may be done separately for the two types. The petitioner has further argued that in view of

significant differences in the export price in terms of square meters, even for the same customer/country, the entire calculation may be done in terms of weight of the material.

6. The Authority notes that there are no submissions opposing the product under consideration. The Authority therefore confirms the product under consideration as Thermal Sensitive Paper.

7. It has been claimed by the petitioner that the Thermal Sensitive Paper being produced by the domestic industry and the Thermal Sensitive Paper exported from EU closely resemble in terms of various characteristics and are technically and commercially substitutable. There is thus no difference in the Thermal Sensitive Paper produced by the petitioner and the subject goods imported from EU. No arguments have been raised by any interested party in this regard. The Authority therefore holds that the Thermal Sensitive Paper produced by the domestic industry is a Like Article to the product under consideration.

D. DOMESTIC INDUSTRY:

8. M/s. Shree Krishna Paper Mills and Industries Limited represent the domestic industry as they account for 100% of the Indian production of Thermal Sensitive Paper. There is no dispute as regards the standing of the petitioner. Therefore, the Authority holds that M/s. Shree Krishna Paper Mills and Industries Limited represent the domestic industry.

E. EXAMINATION OF ISSUES RELATING TO NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING

9. The Authority sent questionnaires to all known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with section 9A(1)(C) of the Act. Responses were received from the following exporters/importers.

Exporters:

- i. M/s. Jujo Thermal Ltd., Finland.
- ii. M/s. Japan Pulp and Paper GmbH, Germany.
- iii. M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany
- iv. M/s. Mitsubishi Hitec Paper, Germany.

Importers:

M/s. Rational Business Corporation, New Delhi

10. Submissions made by the Domestic industry:

- i. Exporters from EU were earlier found to be dumping Thermal Sensitive Paper in the Indian market. The domestic industry was forced to approach the Designated Authority for imposition of anti-dumping duty on imports from the EU. The Designated Authority recommended imposition of anti-dumping duty on imports from EU. However, after imposition of anti-dumping duty on imports from EU, the exporters have intensified their dumping. Further, due to increase in various input costs, the cost of production of the product has increased significantly, resulting in increased injury to the domestic industry. The anti-dumping duty earlier recommended is required to be enhanced against imports from the EU.
- ii. The Designated Authority sent questionnaire to known exporters/producers in EU as also to the Delegation of EU in India. It appears that only one exporter M/s. Jujo Thermal Ltd., responded to the Authority, which also is incomplete. With regard to Koehler, it appears that the company has not filed any response in the present investigations.
- iii. In its response, Jujo Thermal has stated that “as per the company’s valid licence agreement with the license owners, the company’s standard policy and for the reasons of maintaining confidentiality, the company does not part with or transmit the costing information”. It clearly shows that the company has neither furnished cost of production nor the company is willing to furnish the same. The company has deliberately and consciously withheld this information. The cost of production is very crucial information, in the absence of which the whole response deserves to be rejected. Thus, there is no reason for the Designated Authority to even give another opportunity to the company to complete the deficiency.
- iv. As regards exports from Finland, the normal value is required to be determined with reference to the selling price of the exporter in EU. Mere comparison with the prices in Finland would not be sufficient. In case the exporter has provided information on with regard to Finland, the information becomes insufficient on this account alone.
- v. Mere existence of profits in respect of a company is insufficient. The sales in the home market must pass the 80:20 test as provided under Annexure I to the Rules.

- vi. Since the exporters from EU have preferred not to cooperate with the Designated Authority, it is submitted that normal value may kindly be assessed on the basis of best information available, i.e. the data provided by the petitioner. The normal value has been assessed considering the normal value earlier claimed by the exporter from the EU and subsequent increases in the raw material prices, leaving aside other increases in the cost of production. Further, we have determined normal value in EU on the basis of estimates of cost of production. It is submitted that the cost of production after addition of SGA and profit can be considered as good indicator of normal value in EU.
- vii. We have already provided detailed information which shows that after the period earlier investigated by the Designated Authority, the cost of production of Thermal Sensitive Paper has increased substantially due to steep increase in raw materials and fuel prices. We submit that the normal value is required to be calculated considering these cost increases.
- viii. With regard to export price, as is already submitted by the domestic industry and accepted by the Designated Authority in other case relating to China, calculation of export price in terms of square meter would result in inappropriate calculation of export price. We reiterate that the export price can only be determined in terms of weight of the material. It is therefore requested that dumping margin and injury margin in this case may also be calculated in terms of weight of material only.
- ix. Since the domestic industry largely sells in jumbo rolls and since the non-injurious price is determined for jumbo rolls, it is submitted that the export price is required to be calculated for jumbo rolls only. Any imports of other kinds of Thermal Sensitive Paper are required to be excluded for the purpose of export price and landed price calculations.

11. Submissions made by M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany

- (i) The petition of the domestic industry seeking review of anti-dumping duty is not directed against Koehler and the Koehler has not been named as known exporter in the Annexure 'F' filed along with the said petition, therefore, the allegations contained in the petition are not directed against the Koehler and Koehler has not been identified by the domestic industry as guilty of dumping of Thermal Sensitive Paper .

- (ii) The reliance of domestic industry is on secondary source and not on DGCI&S. The purported data collected from secondary source are manipulated, unauthenticated as no responsibility can be fixed on these secondary sources for mis-informations. Moreover, these purported data of secondary sources have also been made as confidential for no reasons.
- (iii) In so far as Koehler is concerned the export price of Koehler's product is considerably higher than the hypothetical export price unilaterally determined by the petitioner.
- (iv) Based on the profit and loss statement and other informations submitted by Koehler depicts that Koehler is making reasonable profits at their domestic selling price is less than the export price of the subject goods to India and there is no dumping of subject goods to India by Koehler.
- (v) There is absolutely nothing to show in support of the allegation that material cost in EU (or world over) has increased.
- (vi) The export price has been calculated by the domestic industry on the basis of a solitary invoice of an anonymous importer and this solitary invoice has been kept as confidential.
- (vii) There is absolutely nothing, leave apart any reliable evidence to show that the raw material cost of the subject goods in EU has increased. Therefore, the normal value of the subject goods as construed by the petitioner, is wholly incorrect as it is not based on any *prima facie* evidence of increase in cost of raw materials in EU.
- (viii) The comparison of Appendix-4 and Appendix-6 (confidential versions of Koehler) *prima facie* shows that export price of the subject goods to India have substantially increased during the period of investigation.

12. Submissions made by Jujo Thermal Ltd., Finland

- (i) The petitioner has in their complaint constructed the normal value based on their increased cost of production, which is contrary to the laws and rules. As the authority needs to

determine the normal value based on the domestic sales price in the exporting country.

- (ii) In the present case the normal value in case of Finland should be based on the domestic selling price of subject goods charged by the exporter during the period of investigation.
- (iii) There was no association or compensatory arrangement between the exporter M/s. Jujo Thermal Ltd., Finland and M/s. Rational Business Corporation, importer in India for the subject goods.
- (iv) Since the domestic selling price charged by them for the subject goods is lower than the export price to India, there is no dumping by them.
- (v) We are making reasonable profits on the sale of the subject goods in Finland which accounts for nearly 95% of our total turnover. The audited balance sheet and income statement of M/s. Jujo Thermal Ltd., shows that the company is making sufficient profits.

13. **M/s. Japan Pulp and Paper GmbH**

M/s. Japan Pulp and Paper GmbH, Germany have informed that they are sales agent of Jujo Thermal Oy, Finland and that they have not exported any direct thermal paper on behalf of the manufacturer during the investigation period.

14. **M/s Mitsubishi Hitec Paper, Germany** sought an extension for submission of response which was also allowed by the Authority. However, no response was received from the said exporter prior to the issue of disclosures. In response to the disclosures the exporter has made submissions regarding quality of Thermal Sensitive Paper produced by them. Other submissions made by them are as under:-

- (i) Thermal papers are used for a wide range of applications than mentioned in the submission. Not only fax but also increasingly non-fax thermal applications. Substitution of our papers by Shree Krishna is not possible. Maybe and only for the purpose of Fax -roll . and here we would even regard the papers uncomparable.
- (ii) We still believe that MPF never supplied any thermal paper with dumping prices into India and we strongly oppose the submission by the petitioner to have intensified dumping.

- (iii) Absolute Increase of imports are because of the increase of the usage of thermal papers in general. The worldwide market is growing by 5-10 % a year. Also Shree Krishna should have increased its sales due to the growing market.
- (iv) The proposed amount of antidumping duty is extremely high and not seen in any other part of the world for thermal papers.
- (v) The current ADD of 0,03842 US\$/100m² is already too high and not acceptable to us (especially considering that the import cost are, apart from the ADD, adding up to another approx. 60 % already).
- (vi) Thermal paper grades which are essential to India's way into future innovative technologies and applications will become so expensive, that India will not be able to adopt those technologies and advantages.

15. Submissions made by M/s. Rational Business Corporation, New Delhi

The petitioner has in their complaint constructed the normal value based on their increased cost of production, which is contrary to the laws and rules. It is only when the relevant domestic sales price in the exporting country are unavailable that the recourse for determination of the normal value may be had by other means as laid down under the rules.

16. Examination by the Authority

a) NORMAL VALUE

- (i) M/s. Jujo Thermal Ltd., Finland have furnished information regarding their exports to India. However they have not furnished full details of transaction wise domestic sales as required in Appendix 1 and cost of production of subject goods as required in Appendix 8 to enable the Authority to determine whether the domestic sales are in the ordinary course of trade.
- (ii) M/s Mitsubishi Hitec Paper, Germany sought an extension for submission of response which was also allowed by the Authority. However, no response was received from the said exporter prior to the disclosures. The exporter has made some general comments. They

have not furnished information regarding exports sales to India, domestic sales, cost of production and sales price structure as required in the questionnaire. The Authority considers the exporter as non-cooperative to the investigation.

(iii) M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany have furnished response giving information about domestic sales, export sales, annual accounts. However, they have not furnished the information on Appendices 4,5,6,8,9 and 10 as required by the questionnaire. The information regarding cost of production furnished is for the year ended 2000 whereas the period of investigation is 1st April 2000 to 31st March 2001. The exporter has also not given information regarding the sale price structure for export to India, export to other countries and for domestic sales as required in Appendix 4,5,6. The exporter also did not give detailed information regarding allocation of costs in the manufacture of the said product as asked by the Authority. The Authority had called for all this information and some other information vide letter dated 29th January 2002 but the exporter has not responded. The exporter was also required to furnish non-confidential version of the information furnished in respect of various appendices. The Authority finds that the exporter did not furnish the non-confidential information of various appendices of the questionnaire. This had been pointed out by the domestic industry in their submissions subsequent to the oral hearing held on 1st March 2002. The exporter has also not responded to the same. The Authority holds that the exporter has not fully cooperated in the investigation.

(iv) The Authority has therefore been constrained to rely upon the best available information as per Rule 6(8) with regard to Normal Value. In the circumstances the Authority has determined the normal value for all exporters in EU on the basis of constructed cost of production on best available information as furnished by the domestic industry. While doing so the Authority has considered the cost of raw material at international prices, the cost of utilities and other expenses as per information furnished by the domestic industry and verified by the authority. The cost of production has been normated for the optimum level of production.

b) EXPORT PRICE

(i) M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany have furnished information regarding export sales to India, ocean freight, commission on sales which have been considered. Information in respect of other adjustments has not been furnished which has been allowed as inland transport @2%, port expenses @2%, packing @1% as claimed by the petitioner. Adjustment on account of 60 days' (average) credit @ 5% p.a. on export sales has been made as the export invoices show credit given to the Indian customers for different periods. The petitioner have stated that calculation of export price in terms of sq. mtr. would result in inappropriate calculation and have requested for determination of export price in terms of weight. The Authority has considered the export price of the subject goods sales in jumbo rolls in terms of weight. The net export price determined for M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany is DM*** /kg.

(ii) M/s Jujo Thermal Ltd. , Finland have furnished information in respect of export sales, ocean freight, insurance which has been considered. Information on account of other adjustments is not supported with documentary evidence. Thus adjustments on account of inland transport @2%, port expenses @2%, packing @1% and credit costs for 60 days @ 5% p.a. have been made. The net export price of subject goods in jumbo rolls determined for M/s Jujo Thermal Ltd is US\$***/kg.

(iii) In respect of other non-cooperating exporters from EU the Authority has considered the evidence of least export price and made all adjustments as above to arrive at the net export price.

c) Dumping Margin:-

The Authority followed the consistent policy of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I of the anti-dumping rules. Dumping margin has been determined on the basis of a fair comparison of Export price with the Normal value in pursuance of the principle laid down in para 6 of Annexure-I to the rules. The comparison is at the same level of trade, i.e. ex-factory level. The Authority has also considered the submissions made by M/s. Jujo Thermal Ltd. and M/s. Rational Business Corporation that anti-dumping

duty be levied in terms of square meters only as the product is sold in square meters. The Authority finds that Thermal Sensitive Paper is produced in different GSM. Taking the unit of measurement in weight terms will take into account the different GSMS. Therefore, the Authority has considered it appropriate to determine the normal value and export price in terms of weight only. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority assessed the dumping margin in case of exporters from EU as under:

S.No	Exporter	Dumping Margin (%)
1.	M/s . Papierfabrik August Koehler AG, Germany	53.07%
2.	M/s Jujo Thermal Ltd. Finland.	36.97%
3.	All other exporters of EU	103.97%

G. INJURY AND THREAT OF INJURY

17. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:

“Determination of Injury:

- (1) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;
- (2) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury , taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules.”

18. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti- Dumping Rules lay down that:

- i. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the

dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.

- ii. While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

19. Views of the Domestic Industry:

- a) Production, capacity utilisation and sales of the domestic industry have increased. However, it is required to be seen in the light of the fact that the domestic industry commenced commercial production only in March, 1997 and therefore the domestic industry has made dedicated efforts in improving its capacity utilization. Increase in production did help the domestic industry in reducing the unit cost of production. However, the domestic industry was not able to recover full cost of production and earn reasonable return. Thus the increase in production and sales volume have not helped the domestic industry in earning reasonable return on its investment.
- b) Domestic industry was forced to increase its selling price in view of increase in the cost of production. However, the domestic industry was prevented from raising the prices to a level which would have provided full recovery of the cost of production and reasonable return on its investments.
- c) The landed value of imported material is significantly below the selling price causing severe price undercutting in the Indian market.
- d) The landed value of imported material is significantly below the cost of production and fair selling price of the domestic industry causing severe price suppression and depression in the Indian market.
- e) The stocks with the domestic industry have been increasing.

- f) The return on investments were negative for the domestic industry.
- g) The domestic industry has faced severe cash flow problems.
- h) The Designated Authority has already acknowledged the injury caused to the domestic industry from the dumped imports from China and EU/Japan. We have provided detailed information to the Designated Authority clearly establishing that the domestic industry continues to suffer material injury from the dumped imports from EU, in spite of imposition of anti-dumping duty in case of imports from EU.
- i) We have already given evidence to the authority showing that selling price of the importer is less than landed value of the imported material from EU which undoubtedly establishes that either (a) there was some compensatory arrangements between the exporter and the importer; or (b) the importers have resorted to misreporting of the import volumes.
- j) Further, petitioner is the only producer of subject goods in India and imports were only from China and EU. Thus, the only reason for the inability of the domestic industry to increase the prices beyond Rs.109130/MT or Rs.6.98/sq. mtr. in the investigation period implies that the weighted average landed price of imports was below Rs.109130/MT or Rs.6.98/sq. mtr.
- k) With regard to the argument that there is no compensatory arrangement between the exporter and Rational Business Corporation we request that M/s Rational Business Corporation be directed to provide full details of its sales of Thermal Sensitive Paper in India.

20. Submissions made by M/s. Papierfabrik August Koehler AG, Germany

- i. There is nothing on record to show any compensatory arrangement between the exporter and importer besides a mere unreliable allegation.
- ii. There is no meaningful causal link existing between the material injury being suffered by the domestic industry and the alleged dumped imports shown by the domestic industry/petitioner.
- iii. The basis of the allegation that there ought to be a compensatory arrangement between the exporter and importer is also the same alleged solitary invoice of an importer.

21. Submissions made by M/s Jujo Thermal Ltd.

The claim of the petitioner that the injury to them has further aggravated is based on only one factor that the domestic industry has not been able to increase their selling price in proportion to the increase in their cost of production. As already mentioned above, this claim of the petitioners is not borne out of the information and data submitted by them in the petition. Besides, none of the other injury parameters mentioned in the petition are supportive of this claim by the petitioner.

22. Submissions made by M/s Rational Business Corporation

- (i) The complaint by the petitioners that the exporter has not increased their selling prices proportionately inline with the increase in cost of raw materials worldwide is not correct as the selling price charged by the exporters in the last two years and during the POI have increased considerably. During POI the increase in cost of production was less than 1% whereas the CIF export price increased by 47%.
- (ii) During the POI the domestic selling price increased by 2.49% over the last year as against an increase of less than 1% in their cost of production.
- (iii) The petitioner has claimed that the imported product is sold at less than the landed cost of the importer, which has caused severe price suppression and depression in the Indian market.
- (iv) A solitary instance indicating the sale of the subject goods in India at a lower price as compared to the price of procurement does not in itself prove that there does exist a compensatory arrangement between the exporter and the importer.
- (v) We reiterate that we have had no such allegedly compensatory arrangement with any of the exporter of the subject goods.
- (vi) The petitioner has calculated the dumping margin by following two different methods. Under the first method, the export price is based on the secondary sources data leading to the maximum dumping margin as 59.11% which is lower than the dumping margin as determined by the authority in the original case, hence there is no increase in dumping margin.
- (vii) Under the second method, the export price is calculated based on a solitary invoice of an importer alleging that the selling price is less than the landed cost of the subject goods. As already mentioned above, this method of arriving at the export price without establishing

any association or compensatory arrangement between the exporter and importer is incorrect and against the provision of the Anti Dumping Rules. However based on the data submitted by us herewith it can clearly be discerned that the selling price charged for the subject goods during the period of investigation is not less than the landed cost. Hence this method of arriving at the export price even otherwise is not applicable in our case.

- (viii) The claim of the petitioner that the injury to them has further aggravated is based on only one factor that the domestic industry has not been able to increase their selling price in proportion to the increase in their cost of production. As already mentioned above, this claim of the petitioners is not borne out by the information and data submitted by them in the petition. Besides, none of the other injury parameters mentioned in the petition are supportive of this claim by the petitioner.
- (ix) As such there is no dumping of subject goods, there is no injury to the domestic industry and there is no causal link between the two.

23. Examination by the Authority

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market, their share in the demand, the magnitude and margin of dumping, production, capacity utilisation, quantum of sales, closing stock, net sales realisation, cash flow, profitability, employment, wages etc. in accordance with Annexure II of the Rules supra.

i) Volume of imports

The Authority has considered the information regarding the imports of Thermal Sensitive Paper during the POI as received from various sources viz. the DGCI&S, Kolkata, Customs Authorities, secondary sources besides the information received from the exporters and the sole importer. The Authority finds that no single source gives the complete and correct information about imports of TSP during the POI. After taking into account the information from various sources the Authority finds that imports from EU during POI were 366.57 Tonnes. The Authority finds that these imports are 86.53% of the total imports during POI. The imports of Thermal Sensitive Paper were as under:

(Imports in MT)			
Country	1998-99	1999-2000	2000-2001 (POI)
European Union	4.28	260.54	366.57
China	0.00	0.00	32.63
Others	74.91	158.71	24.43
Total	79.19	419.25	423.63

Therefore, the Authority considers the volume of dumped imports from subject country/territory to be significant as there has been an increase in the dumped imports in absolute terms. The imports from subject country/territory increased by 40.69% during POI when compared with the imports during the previous year.

ii) Share in demand

Share in %	1998-99	1999-2000	2000-2001 (POI)
Domestic industry	91.07	71.70	76.89
EU	0.48	17.58	19.98
Others	1.48	10.72	3.13

iii) Production and Capacity utilization

The production and capacity utilization of the domestic industry has been as under:

	1998-99	1999-00	2000-01 *
Capacity	100	100	100
Production	100	140.17	196.24
Capacity utilization	100	140.17	196.24
Sales	100	131.54	174.6

* Note: Indexed figures considering 1998-99 as 100

iv) Closing stock

The closing stock of the domestic industry was found to be as under:

Year	Closing stock in MT
1998-99	100
1999-00	808.31
2000-01 (POI)	1466.97

* Note: Indexed figures considering 1998-99 as 100

v) Selling price

Selling price of the domestic industry has been as under:-

Year	Selling price Rs./sq. mtr.
1998-99	100
1999-00	144.28
2000-01 (POI)	147.88

* Note: Indexed figures considering 1998-99 as 100

vi) Price Under cutting

The Authority finds that the average net sales realization of the domestic industry during the POI when compared with the average landed value of imports of the subject goods from subject countries/territory do not show significant price undercutting. However, the Authority finds that a significant volume of the imports caused price undercutting as the landed value of these imports was significantly lower than the average sales realization of the domestic industry.

vii) Price Suppression:

The Authority finds that the domestic industry has been able to raise its selling price to Rs. *** per kg. during the POI. However, it is seen that the domestic industry has not been able to raise the selling price to a level to recover its full cost of production and to achieve a reasonable return. The average landed value of imports of subject goods from subject countries/territory has been Rs. *** per kg. which is significantly lower than the cost of production. The Authority finds the suppression of price to the extent of %.

viii) Profitability

The profitability position of the company has been as under:

Year	Cost of production	Selling price	Profit/loss
1998-99	100	100	(-) 100
1999-00	117.25	144.28	(-) 64.32
2000-01 (POI)	118.23	147.88	(-) 60.17

* Note: Indexed figures considering 1998-99 as 100 (Rs. /sq/mtr)

ix) Employment

The Authority finds that there has not been any significant change in the employment level of the domestic industry.

x) Wages

The Authority finds that the wages of the employees have increased marginally.

xi) Cash flow

The Authority finds that the cash flow position of the domestic industry has been as under:

Year	Cash flow
1998-99	(-)100
1999-00	(-)131.7
2000-01 (POI)	(-)83.84

* Note: Indexed figures considering 1998-99 as 100

24. The Authority has taken into account all indices regarding injury while doing the final determination. This involved all relevant facts viz., volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market and its subsequent effect on domestic producers, production, capacity utilisation, profitability, net sales realisation etc. While determining the non-injurious price for the like article for the domestic industry, the Authority has considered the optimum cost of production for the domestic industry taking into account the normated best consumption norms and the actual price of the raw materials during the POI which go into the production of the product under consideration. Also, while arriving at the injury margin, the Designated Authority has taken into account optimum capacity utilisation for arriving at a fair selling or non-injurious price.

25. After taking into account all the above indices the Authority has made following conclusions regarding injury while doing the final determination:

- (i) There has been significant increase in the dumped imports in absolute as well in relation to the total demand.
- (ii) The domestic industry has suffered price under-cutting from a significant volume of dumped imports from the subject country/territory.
- (iii) The domestic industry has suffered Price Suppression as a result of dumped imports. The average landed value of imports of subject goods from subject country/territory were significantly lower than the cost of production. This has prevented the domestic industry to raise its selling price to a remunerative level.

(iv) The petitioner held finished goods inventory of Thermal Sensitive Paper which was 81.53% higher than the inventory at the end of financial year 1999-2000. The Authority finds that the domestic industry has also suffered material injury on account of higher inventory of Thermal Sensitive Paper at the end of POI.

(v) The capacity utilization of the domestic industry has increased from 53.74% in 1999-2000 to 75.23% during POI and the production has also increased. However, the domestic industry has been prevented from utilization of higher capacity due to dumped imports.

(vi) The share in demand of the imports from subject country/territory was 19.98%, that of the domestic industry 76.89% and of imports from other countries 3.13% during the POI. The share of the domestic industry was 71.70% and that of the subject country/territory 17.58% during the previous year 1999-2000. The Authority observes that there was significant increase in the market share by the imports from subject country/territory.

(vii) The domestic industry has continued to suffer losses in the production and sale of subject goods since the sales realization have been lower than the cost of production.

(viii) The domestic industry continues to have negative cash flow.

(ix) The demand of the product has not decreased and has, therefore, not contributed to injury to the industry.

26. Threat of Injury

The Authority has examined the threat of injury to the domestic industry as per para (vii) of Annexure II of Rules *supra*, and concludes that the imports from subject country grew in absolute terms and also as a share of demand from 17.58% during the previous year to command a 19.98% share in the total imports. The Authority finds the dumped price of these imports from the subject country to hold a significant threat in depressing the price of the like product in India. There is every likelihood that imports may keep coming at dumped price in larger quantities causing serious threat of injury to the domestic industry. On the basis of the evidence available before it, the Authority therefore concludes that there is a serious threat of material injury being caused to the domestic industry on account of dumped imports of subject goods from subject country/territory.

H. CAUSAL LINK:

27. The Authority holds that the substantial increase in import of subject goods from EU at dumped price has led to price undercutting and severe price suppression of the subject goods produced by the domestic industry. This has resulted in the building up of inventory of finished goods with the domestic industry. The domestic industry has suffered losses due to its net sales realization being lower than the cost of production. This clearly establishes the causal link between the injury suffered by the domestic industry with the dumping of subject goods from EU. The Authority finds that there is a causal link between the dumping of subject goods from EU and the injury being caused to the domestic industry during the period of investigation.

I. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES

28. The Authority reiterates that the purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

29. The Authority recognises that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

J. FINAL FINDINGS

30. After considering the foregoing the Authority concludes that -

- (i) thermal Sensitive Paper has been exported from European Union to India below its normal value;
- (ii) the Indian industry continues to suffer material injury on account of price undercutting, price suppression, significant

increase in the volume of dumped imports, increased inventory, financial losses as a result of dumped imports from subject country/territory and is being threatened with further injury; and

- (iii) the injury has been caused to the domestic industry by the dumped imports from the subject country/territory.

31. The Authority considers it appropriate to recommend the continuation of anti-dumping duty in force on imports of Thermal Sensitive Paper originating in or exported from EU. The amount of anti-dumping duty shall be equal to the margin of injury, being lesser than the dumping margin, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury margin, the landed price of imports has been compared with the non injurious selling price of the petitioner company determined for the period of investigation.

32. The anti dumping duty shall be on all imports of Thermal Sensitive Paper falling under Customs heading 4809.10 or under heading 48.11 or 48.16 of first Schedule to the Customs Tariff Act originating in or exported from the European Union. The anti dumping duty shall be the difference between the amounts mentioned in column 3 below and the landed value of imports in US\$/MT.

Sl.No.	Country	Amount (US\$/MT)
1	2	3
1	M/s . Papierfabrik August Koehler AG, Germany	2947.92
2	M/s Jujo Thermal Ltd. Finland.	2947.92
3	All other exporters of EU	2947.92

33. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act,1975.

34. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, *supra*.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority